कर्मकाण्ड एवं संगीत का सम्बन्ध

डा. भुवनेश्वर लाल
संगीत अध्यापक, मैक्स इटरनैशनल स्कूल, कुल्लू

Abstract

The purpose of this study was to study the relation between Karamkand (Ritualism) and the Music. Karmkand in very popular in Indian culture. On every occasion rituals are there and in these different rituals music in one of the main component. Vedic music is generally used in the rituals. Rigveda, Yajurveda, Samveda and Atharvaveda are the for Vedas on which Indian Hindu rituals performed. Swars, Voice modulation etc. are used as described in the Vedas. Talas and different layas are merged with the mantras. Various musical instrument are used in rituals like dholak, manjeera, khartala etc.

Key words: Karmkand, Sangeet, Vedas, Poojan.

भारतीय संस्कृति की नींव हमारे वेद सांहितायें है। वेदों से ही हमारी संस्कृति धर्म, दर्शन, शास्त्र, ज्ञान, कर्मकाण्ड व संगीत की उत्पति हुई है। संस्कृति की रक्षा का क्षेय हमारे ऋषि, मुनि एवं आचार्यों को जाता है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक हमारी संस्कृति में कर्मकाण्ड पूजा विधान–विद्यमान ह। वहीं दसरे पक्ष में शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत की दृष्टि नजर आती है। इस प्रकार धर्म, सस्कृति, यज्ञ व कर्मकाण्ड में संगीत का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। यही कारण है कि संगीत कला को ललित कलाओं सें सर्वोच्च कहा जाता है। इतिहास का अवलोकन करने पर यह भी पाया जाता है कि भारतीय समाज ही नही बल्कि सम्पूर्ण विश्व धर्म के आवरण में आवेस्थित रहा है। अतः मानव को सामाजिक प्राणी के साथ–साथ धार्मिक प्राणी कहना उचित होगा। जिस प्रकार मनुष्य समाज के बिना नही रह सकता, उसी प्रकार मानव धर्म संस्कार के बिना नही रह सकता। धर्म व संस्कति का सम्बन्ध मानव से ही माना गया है। क्योकि धर्मिक क्रिया–क्लापों द्धारा जैसे यज्ञ, संस्कार, कर्मकाण्ड, द्धारा विभिन्न फल की प्राप्ति तथा यज्ञ में वैदिक मन्त्रों द्धारा देवताओं को प्रसन्न करना सनातन धर्म से माना गया है। धर्म, संस्कृति के साथ संगीत की भूमिका आवश्यक मानी जाती है। वैदिक साहित्य में जहाँ ऋग्वेद में ऋचाएं तथा यजुवेद में कर्मकाण्ड, यज्ञ, अनुष्ठान, तथा पुराणोक्त मन्त्र व लौकिक व वैदिक छन्द विद्यमान हैं, साथ ही सामवेद संगीत की कुन्जी मानी जाती है। मन्त्रों में ऋचाएं एवं यजुष का अपना महत्व है। लेकिन यज्ञों व मन्त्रों के साथ साम का महत्व सर्वोपरि है।

कर्मकाण्डडारण्यः क्रियामयों द्वितायों विषय

क्रिया प्रधान कर्मकाण्ड नामक दसरा विषय माना गया है। यज्ञ एवं कर्मकाण्ड प्राचीन काल से ही भारतीयों का मुख्य कर्तव्य रहा है। इसे देवताओं की तुष्टि का श्रेष्ठ साधन माना गया है। भारतीय संस्कृति में यज्ञ के तीन स्वरूप माने गए हैं– वैदिक यज्ञ, समृति यज्ञ एंव लौकिक यज्ञ। यजुर्वेद का घनिष्ठ सम्बन्ध याज्ञिक प्रक्रिया से है। यह तो उसके नाम स्पष्ट है। ऋग्वेद में सोम यज्ञ का अतिशय महत्व है किन्तु अध्वर्यु पुरोहितों का प्रमुख वेद यजुर्वेद है। कर्मकाण्ड एवं संगीत का सम्बन्ध प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विद्यमान है। वैदिक काल में यह मान्यता थी कि जिन यज्ञों–यागों में संगीत के सामगान का प्रयोग न हो तो वह यज्ञ विफल माना जाता था। अतः परस्पर सम्बन्ध के लिए देव पूजन मे वैदिक वाद्य जैसे शंख, घण्टिका, खड़ताल आदि वाद्य का प्रयोग आवश्यक माना गया है। जो कि देवताओं के आवाहन के लिए बजाए जाते हैं। प्राचीन काल में पुजा विधान में जो वाद्य प्रयोग लाए जाते थे वह वीणा, मृंदग, वंशी, झतलरी, तूर्य, कहल, शंख, मुरग, परह पणव, और दुदुभि आदि वैदिक वाद्यों को इस रचण में उल्लेखित किया जाता था।

वैदिक स्वरों द्धारा मन्त्रों का उच्चारण आधुनिक काल में भी छन्द व लय बद्ध होता है। इनमें प्रमुख कार्य गणपति पूजन, स्वस्तिवाचन, कुल देवता, दुर्गा सप्तशती पाठ, रूद्री पाठ आदि त्रि–स्वर, द्वि–स्वर, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वरों के द्धारा उच्चारित किए जाते हैं। वेदान्त में वर्णित है उदात्त का उच्चारण दाहिने हाथ का सिर के समीप तक उठाया जाता है, अनुदात्त के उच्चारण को ह्रदय तक उठाया जाता है तथा स्वरित के उच्चारण को कान के समीप ले जाया जाता है। यह स्वर साम स्वर माने गए हैं। इनके साथ मात्रा, छन्द, लय भाषा, व्याकरण से कर्मकाण्ड में प्रयोग किय जाते हैं।

कर्मकाण्ड में मन्त्रों के प्रथम स्वर का प्रारम्भ ओउ्म स्वर से होता है तथा अन्त स्वर भी ओउ्म ही माना जाता है। सम्पूर्ण गान का उपगाताओं के द्धारा मन्द्र स्वर गान से संगीत प्रारम्भ किया जाता है। जिससे सामगान के विभाग एक दसरे से जुडे हुए प्रतीत होते ह। इन उपगाताओं का गान आधुनिक तानपुरे जैसा ही आधार स्वर बोध करता है। कर्मकाण्ड व यज्ञों में आर्चिक, गाथिक सामिक क्रमशः एक, दो तथा तीन स्वर के समूह से निर्मित होते हैं। यज्ञ प्रयोगों में ऋचाओं का गान एक ही स्वर के आश्रय से बताया गया है। ब्राहमण–वाक्य गाथाओं में द्विस्वर –समूह तथा सामगान में प्रमुखतय से तीन स्वरों का प्रयोग है तथा यही स्वरान्तर सामिक के नाम से सम्बोधित साम को आर्चिक संहिता ग्रन्थ में मुख्यतय उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरों का व्यवहार कहलाता है।

उच्च नीच विशेषादि स्वरान्यत्वं प्रवर्तते।

नारदीय शिक्षा के अनुसार उदात्तदि स्वर प्रधान है तथा उन्हीं से व्यंजन भी स्वर सहित हो जाते हैं। उदात्त, अनुदात्त एंव स्वरित के अतिरिक्त वैदिक स्वरों में प्रथम तथा निघात का भी उल्लेख है। यह तथ्य मानवीय है कि वैदिक स्वरों का विकास एक स्वर से आरम्भ होकर क्रमशः सात स्वरों तक एक–एक हुआ है। यह स्वर कर्मकाण्ड में वैदिक काल से आधुनिक काल तक प्रयोग में विभिन्न विधियों में लाए जाते हैं।

जैसेंः– आर्चिक – 1 स्वर, वैदिक मन्त्र उच्चारण

गाथिक – 2 स्वर, दुर्गा शप्तशती पाठ, गाथा गान

सामिक – 3 स्वर, स्वस्तिवाचन, रूद्री पाठ आदि

स्वरान्तर – 4 स्वर, लौकिक छन्द स्तुति, ध्यान, आवाहन

औड़व – 5 स्वर, लौकिक छन्द स्तुति, ध्यान, आवाहन

षाड़व – 6 स्वर, लौकिक छन्द स्तुति, ध्यान, आवाहन

सम्पूर्ण – 7 स्वर, लौकिक छन्द स्तुति, ध्यान, आवाहन।

काफी लम्बे समय तक प्राचीनम मुनि ऋग्वेद, यजुर्वेद के मन्त्रों का उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वरों का आधार पाठ करते रहे। मन्त्रों का उच्चारण को अधिक आकर्षक और मनोरंजन बनाने के लिए सामवेद की रचना हुई। सामवेद में संगीत एक प्रकार की योग साधना है। उसमें ध्वनि, कम्पन नाभि–प्रवेश से निकलकर ब्रह्म–रन्ध्र में लाये जाते है। यहाँ तालु से उन्हें पकड़कर मनोमय विघुत का संयोग दिया जाता है, तब वह मूंह द्वारा बाहर निकलता है। इस तरह नियन्त्रित स्वर पानी में भ्रमर अथवा गोलाकर चक्र के रूप में निकलता है। फिर उसका प्रयोग इच्छानुसार किसी भी प्रयोजन में हो सकता है। हर प्रयोजन के लिए अलग–अलग राग खोजे गये है जो मंत्रवत् काम करते है। मन्त्रों में प्रयोग गायत्री मन्त्र के समान किसी भी अवस्था में मानव को हानि नहीं पहुँचती, बल्कि लाभ पहुँचता है।

पाणिनीय शिक्षा के अनुसार ऋक मन्त्र का पठन गान के सदृश न जाने चाहिए। स्त्रोत के रूप में प्रयुक्त किये जाने पर तीन स्वरों पर इनका गान किया जा सकता है। आज भी कर्मकाण्ड में तीन स्वरों का प्रयोग यज्ञ में अधिक प्रयोग किया जाता है। सामगान के प्रमुख सप्तस्वरों के निम्न अभिधान भी है, तथा वैदिक काल के प्रमुख स्वर– प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्त्र, कुष्ट एवं अतिस्वार स्वर है। वेद मन्त्रोंच्चारण के लिए प्रसन्न मन शुद्ध आसन पर स्वस्तिक या पद्य आसन से बैठकर, बाएं हाथ की मुट्ठी पर दाहिना हाथ रख सब अंगुलियाँ मिलाकर गोकणाकृति हाथ रखते हुए बैठना चाहिए। वेद–पाठ करने में न बहुत शीघ्रता करें

न मन्दता करें। शान्त भाव से स्वर को ऊँचा –नीचा बिना किए एक लय से उच्चारण करनाा पडता है। मन्त्र पाठ आरम्भ करते समय प्रथम दीर्घ उच्चारण श्हरि ऊँश का किया जाता है। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनीय शाखा में उदात्तदि स्वरों का हाथ से बोधन कराया जाता है। इन उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि स्वरों का उच्चारण कर्मकाण्ड मे हस्त मुद्रा दोनों एक साथ रहनी चाहिए। क्योंकि लिखा है –

‘हस्तभ्रष्टः स्वराद् भ्रष्टो न वेदफलमश्नुते’

हस्त – स्वर की बड़ी महिमा है इसके ज्ञान बिना वेद – पाद का यथार्थ फल प्राप्त नहीं होता।

वेद में प्रयुक्त विशेष चिन्ह

उदात्त	–	चिन्ह रहित होता है – क
स्वरित	–	वर्ण के ऊपर खड़ी रेखा – क
अनुदात्त	–	वर्ण के नीचे तिरछी रेखा – ख॒
अनुस्वार ह्रस्व	–	ꣳ
अनुस्वार दीर्घ या	–	ठ
विसर्ग उदात्त के आगे	–	–
विसर्ग अनुदात्त के आगे	–	–...
मध्यावर्ती स्वरित	–	[illegible] – [illegible]
अर्ध न्युब्ज तथा पूर्ण न्युब्ज़	–	[illegible]

नारदीय शिक्षा के इस साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि ऋजु–सप्तक में साम–स्वरों का क्रम म – ग – रे – सा – नि – ध – प इस प्रकार रहा है। यह लौकिक स्वर सप्तक भी अवरोह क्रम में हैं। इस दृष्टि से सामिक स्वर सप्तक तथा गान्धर्व स्वर सप्तक दोनों का स्वर निम्न प्रकार से होगा –

1–2– 3–4– 5– 6–7

म–ग–रे–सा–नि–ध–प

भारतीय लौकिक संगीत की विशेषता यह है कि यह सामिक स्वरों की भांन्ति अवरोहात्मक न होकर आरोहत्मक है। इसमें जो सा–रे–ग–म–प–ध–नि सप्तक है इसमें सां–स्वर ऊँचा है। यह क्रम ‘नि’ तक इसी प्रकार चलता है। अब प्रश्न यह है कि गान्धर्व स्वर–सप्तक में गाये जाने वाले सामगान का आधुनिक स्वर–सप्तक को

अवरोह क्रम में बदल देने से हल हो सकता है। स्वरो को अवरोह क्रम में परिवर्तित का देने से स्वर–सप्तक इस प्रकार बनेना –

सां – नि – ध – प – म – ग – रे – इस आधार पर सां – नि – ध – प – म – ग रे – सा मे सामिक – सप्तक म – ग – रे – नि – ध – पं के स्वरान्तराल प्राप्त हो सकते हैं। स्वर–सप्तको की तालिका से यह बात स्पष्ट होती है –

सामिक स्वर	1–2–3–4–5–6–7
गान्धर्व स्वर	म–ग–रे–सा–नि–ध–प
आधुनिक स्वर	सां–नि–ध–प–म–ग रे (सा)

वैदिक छन्दों में प्रायः लघु, गुरु मात्राओं का अनुसरण नहीं किया जाता है। इसलिये समस्त वैदिक छन्द अक्षर छन्द है। प्रतिशाख्यों में गुरु लघु तथा उनकी वृतियों का भी वर्णन मिलता है। सात छन्द वैदिक है जो गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जगती। वैदिक छन्दों जो यह सात छन्द है इन्हीं से हो अनेक लौकिक छन्दों का निर्माण हुआ है। पिंगलाचार्य ने अपने महाग्रन्थ में एक करोड़ लाख सतहत्तर सहस्त्र दो सौ सोलह प्रकार के वर्णवृतों का उल्लेख किया है। इन लौकिक छन्दों का प्रयोग कर्मकाण्ड शैली में प्रयोग होता है। जैसे – उपेन्द्रवज्रा छन्द में 11 मात्रा का प्रयोग किया जाता है तो प्रस्तुत छन्द को मन्त्र 11 मात्रा में लय बद्ध में गाया जाता है। इसी प्रकार कर्मकाण्ड पद्धति में मन्द्रकान्ता छन्द को चौदह मात्रा दीपचन्दी ताल के साथ मन्त्रों व स्तुति को लयबद्ध व ताल बद्ध रूप से गाया व बजाया जा सकता है। हर एक छन्द को लौकिकता के आधार पर अनेक रागों में ढाल सकते हैं। जैसे देश, बिलाबल, भैरव, भैरवी, भोपाली राग इत्यादि। स्वस्तिवाचन में तीन स्वरों का प्रयोग भी वैदिक स्वरों के संकेत क अनुसार लौकिक स्वर के रूप में निसासारेसा स्वर संगीत में लय बद्ध गाया जाता है। स्वस्तिवाचन तथा अन्य वैदिक मन्त्रों में प्रमुख राग बैरागी भैरव राग की छाया प्रकट होती है। विनियोग के आधार पर मन्त्रों उच्चारण किए जाते है। संगीत में ईश्वर से साक्षात्कार करने की असीम शक्ति निहित है।

भारतीयों में संस्कारों का महत्व सर्वनिहित है। मनुष्य के वैयक्तिक जीवन के साथ सम्बन्ध रखने वाले ये संस्कार भी बिना यज्ञ व संगीत से सम्पन्न नही माने जाते हैं। जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक को अनेक प्रकार के यज्ञ करने पडते हैं। इन संस्कारों में प्रमुख तय नामकरण, चूडाकर्म, विवाह आदि संस्कारों में वैदिक मन्त्रों द्धारा सम्पन्न किए जाते हैं। लेकिन साथ ही इन संस्कारों में लोक संगीत का वर्णन भी कर्मकाण्ड के साथ किया जाता है। यह लोक गीत लय बद्ध नही माना

जाते हैं। लेकिन कर्मकाण्ड में प्रमुख तयः देव पुजन व स्वस्तिवाचन, ध्यान आदि गान शास्त्रीय की विधि लोकचार के अनुसार की जाती है। लेकिन मन्त्रोंच्चारण का पक्ष वैदिक साम स्वरों पर तथा लौकिक छन्दों पर निर्भर रहता हैं। यज्ञ में हवन आदि आहुति दी जाती है। साथ ही देवताओं के बल प्राप्ति के लिए शंख, घण्टी, खडताल, जय घण्टा आदि बाद्य प्रयोग में लाए जाते हैं। यह स्तुतिपरक माना जाता हैं।

दिव्य शक्ति देवताओं में इन्द्र,अग्नि एंव वायु आदि देवताओं से हवन के माध्यम द्धारा शक्ति प्राप्त की जाती है। कर्मकाण्ड व संगीत का उद्वेश्य मनोरंजन तथा सामाजिक कल्याण, यश, धन, समृद्धि का मार्ग माना गया है।

संगीत की उत्पति तथा मन्त्रों का प्रार्दुभाव वेदों से माना गया है। वेदों से ही हमारी संस्कृति का दिदर्शन होता है। चारों वेदों में यजुर्वेद संहिता में यज्ञ प्रक्रिया व कर्मकाण्ड का वर्णन पाया जाता है। साथ ही कर्मकाण्ड पूरे भारत वर्ष में वैदिक संगीत व संस्कार गीतों की लड़ी में पिरोया गया है। यह चाहे कर्मकाण्ड के साथ जन्म संस्कार गीत हो या विवाहित गीत हो, या अन्य उत्सव या त्यौहार हो, संगीत की भूमिका देखने को मिलती है। अमल डॉ. शर्मा भक्ति संगीत नामक पुस्तक के सम्बन्ध में विचार करते हुए रहते हैः–

जप कोटिगुंन ध्यान, ध्यान कोटि गुण लयः।

लय कोटिगुंन गांन गानात् पस्तंर नाहि।

अतः यह कहा जा सकता है कि जप, तप, ध्यान, लय के साथ गान का महत्व सर्वोपरि रहता है। कर्मकाण्ड एंव संगीत वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक परस्पर साथ चले है। यह दोनों ही कर्मकाण्ड एंव संगीत पद्धति मानव जीवन में मानसिक, शारीरिक एंव अध्यात्मिक ज्ञान का बोध समय –समय पर करवाती रहती हैं। यथाचित यही सत्य है। संगीत के स्वर मन की एकाग्र करके इतना अधिक लीन, तन्मय और स्थिर कर देते है के ह्रदय समस्त चंचल वृतियाँ केन्द्र भूत होकर अन्तमुखी हो जाती हैं। यह साक्षात्कार हमें मंदिरों, यज्ञों व धार्मिक स्थलों में प्रकट होती हैं। पूजा स्थलों पर जब स्तुति व आंरतियाँ भी लौकिक रूप से अनेक रागों में गायी जाती हैं। साथ ही लोक ताल, आरती ताल, कहरवा, दादरा, दीपचन्दी, एकताल आदि तालों का प्रयोग भी किया जाता है। जहाँ एक तरफ शास्त्रीय मन्त्रों की गूंज फैलती हैं, वह लोक ताल के साथ संगीत का समय सार बाधा जाता है। यह प्रथा हमें पोढी दर पीढी रिति–रिवाजों में देखने को मिलती है। पुरोहित वर्ग द्धारा देवताओं की प्रार्थना छन्द व लयबद्ध तरीके से सुनने को मिलती है। साथ ही उन्ही मांगलिक उत्सवों पर महिलाएं उन संस्कार गीतों को अनेक रागों में प्रकट करती हैं। यह राग क्रमशः पीलू, भैरवी, देश, राग आदि होते है। इन रागों को

निबद्ध व अनिबद्ध तौर पर गाया जाता है। मन्त्रों में भी यही अवधारणा रहती है। यही कारण है कि आज के समय में हमारी संस्कृति व विरास्त संगीत व कर्मकाण्ड द्वारा सुरक्षित मानी गई है।

संदर्भ ग्रंथ

यर्जुवेद संहिता, डा. श्रीधर दमोदर सात बेलेकर पृ.–38 स्वाध्याय मण्डल पारडी, संस्करण, 1985।
पाचीन भारत में यज्ञ –परम्परा, डा. रविन्द्र प.–34 शिक्षिर प्रकाशन मेरठ, प्रथम संस्करण, 2001
भारतीय संगीत का इतिहास, श्रीधर शरच्चन्द्र परांजपे पृ.–82मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भौपाल, 1980।
संगीत निबन्ध माता – डॉ. एम. विजय लक्ष्मी पृ.–13 संजय प्रकाशन दिल्ली, 2006।
नित्य कर्म – विधि देव पूजा पद्धति – प. माया प्रसाद शास्त्री पृ.–267 गीता प्रेस गोरखपुर,
यर्जुवेद भाषा भाष्य – स्वामी दयानन्द पृ.–116 स्वाध्याय मण्डल किल्ला पारडी, प्रथम संस्करण, 1993
वैदिक बाह्ण्मय इतिहास – कुन्दन लाल शर्मा
प्राचीन भारतीय संस्कृति – डॉ. विरेन्द्र सिंह पृ0 –11 शिक्षिर प्रकाशन मेरठ, प्रथम संस्करण, 2001
प्राचीन भारत में संगीत – डॉ. पूनम मिश्रा पृ 29 राधा पब्लिशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006।
वैदिक ध्वनि–विज्ञान डॉ. चमन लाल गौतम, – पृ0– 77 अक्षरवट प्रकाशन, इलाहावाद, संस्करण, 1995।
छन्द प्रवेशिका – प्रभा पृ.–10 विधि निधि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1955 ।
संगीतिक एंव धार्मिक परम्परा – एक अवलोकन –डॉ. भारती शर्मा पृ.–1 राधा पब्लिशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2006।
सामगान, उदभव, व्यवहार एंवम सिद्वान्त––डॉ. पंकज माला शर्मा, पृ.–421 कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन होशियारपुर, 1996।
कुमारी, डॉ किरण वैदिक साहित्य और संस्कृति न्यू भारतीय बुक कम्पोरेशस दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001
अस्थाना, डॉ. रीना गृहानुष्ठानों का सांस्कृतिक अन्वेषण नाग पब्लिशिंग दिल्ली। प्रथम संस्करण, 2009
रानम आरती संग्रह राज पॉकेट बुक्स नई दिल्ली, संस्करण 2009